शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण
सत्र 6. आपको कैसे पता चलेगा कि आप शिष्य हैं? (3)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **मत्ती 7:21**
21 "जो कोई मुझ से कहता है, 'हे प्रभु, हे प्रभु, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा।
परन्तु जो मेरे पिता की इच्छा पर चलता है, जो स्वर्ग में है.

चरण 3: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* **- *मैथ्यू 7***

चरण 4: व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. गलत पहचान के बारे में एक कहानी के आधार पर, मसीह यीशु के शिष्य बनना क्यों महत्वपूर्ण है, इससे पहले कि वह हमें शिष्य बनाने का अपना कार्य करने के लिए उपयोग कर सके? वह है मसीह जैसे चरित्र की उपस्थिति।

दो. दुनिया इस बात की पुष्टि नहीं करती है कि हमारा चरित्र हमारे कौशल या क्षमताओं से अधिक महत्वपूर्ण है। हम इस सांस्कृतिक सिद्धांत का मुकाबला कैसे कर सकते हैं? यह एक सार्थक मानसिकता है।

तीन. क्या आप समझते हैं कि परमेश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो लोगों को पश्चाताप और अंगीकार करने के लिए प्रेरित कर सकता है? कि परमेश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो लोगों को उस पर विश्वास करने के लिए परिवर्तित कर सकता है? रचनात्मक सुसमाचार प्रचार कौशल विकसित करने के बजाय, हमारा काम मसीह के चरित्र को विकसित करना है और फिर बस उसके और उसके राज्य के बारे में गवाही देना है। उसे आत्माओं को परिवर्तित करने का काम करने दें।

चार. लेखक की थीसिस का एक प्रमुख हिस्सा यह है कि मसीह के चरित्र का वर्णन करने वाले कई गुणों में से, चार गुण हैं जो यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में अलग करते हैं और इन गुणों को अपने पुत्र के साथ परमेश्वर के संबंध और चर्च के साथ मसीह के संबंध का वर्णन करना चाहिए। क्या आप इस बात से सहमत हैं कि ये गुण शिष्य के अपने प्रशिक्षक के साथ संबंध में भी मौजूद होने चाहिए?

पाँच. फिलिप्स सुझाव देते हैं कि आज्ञाकारिता, अधीनता, प्रेम और प्रार्थना के ये चार गुण या उद्देश्य एक शिष्य के रूप में सेवा करने की कला में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए हमारा बैरोमीटर है जो शिष्य बनाता है जो शिष्य बनाता है जो शिष्य बनाता है। हम इसे "दूसरों को प्रशिक्षित करने के लिए शिष्यों को प्रशिक्षित करना" और "प्रजनन शिष्यों को प्रशिक्षित करना" कहते हैं। चर्चा करें कि प्रशिक्षण पर यह जोर क्यों आवश्यक है।

चरण 5: *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*

अध्याय 3 लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:

बहुत से लोग आत्म-मृत्यु का अनुभव करने और पूरी तरह से मसीह के प्रति प्रतिबद्ध होने का दावा करते हैं। लेकिन यीशु ने कहा, "हर कोई जो मुझ से कहता है, 'हे प्रभु, हे प्रभु,' स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा; परन्तु जो मेरे पिता की इच्छा पर चलता है जो स्वर्ग में है" (मत्ती 7:21, इटैलिक जोड़ा गया)।

मेरे एक मित्र एड का अनुभव गलत पहचान की गंभीरता को दर्शाता है। जब सोने की आसमान छूती कीमत ने कैलिफ़ोर्निया गोल्ड रश के पुनर्जन्म को प्रज्वलित किया, तो एड ने "मदर लोड" देश में संपत्ति खरीदी, इसे अमीर बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित किया। दो महीने तक उन्होंने अठारह घंटे काम किया, लेकिन गंदगी और चट्टानों के अलावा कुछ नहीं मिला। फिर उन्होंने पीले अयस्क की खोज की। उसने सोचा कि उसने एक बोनान्ज़ा मारा है। वह अयस्क को परख करने वाले के कार्यालय में ले गया और अधिक पुरुषों को काम पर रखने और यूरोपीय छुट्टी लेने की योजना बनाने लगा।

लेकिन एड की घबराहट के लिए, परख करने वाले ने घोषणा की कि उसने जिस अयस्क का खनन किया था वह मूर्ख का सोना था। एड को विश्वास नहीं हो रहा था। उसे यकीन था कि उस आदमी ने गलती की है। लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ता कि एड ने कितनी सख्ती से विरोध किया, वह भट्ठी से उठने वाली सल्फर गंध पर विवाद नहीं कर सका। अयस्क ने ही इस मुद्दे को सुलझा लिया।

एक खनिक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी खोज सोना है, इससे पहले कि वह इसका उपयोग वस्तुओं और सेवाओं को प्राप्त करने के लिए कर सके। तो, यह परमेश्वर के साथ है। वह मांग करता है कि हम मसीह के शिष्य बनें, इससे पहले कि वह हमें अपना काम करने के लिए उपयोग कर सके।

तो, आपको कैसे पता चलेगा कि आप मसीह के शिष्य हैं? आपको कैसे पता चलेगा कि आपने आत्म-मृत्यु का अनुभव किया है और प्रजनन के योग्य हैं? यह समझने में निर्विवाद प्रमाण कि आप मूर्खों के सोने के आध्यात्मिक संस्करण हैं या वास्तविक चीज मसीह जैसे चरित्र की उपस्थिति है। यदि मसीह का चरित्र गायब है, तो आप अपने आप के लिए नहीं मरे हैं और प्रजनन के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

शायद सबसे कठिन बाधा जिसका आप सामना करेंगे, वह वास्तव में यह विश्वास करना है कि आपका चरित्र आपके कौशल या क्षमताओं से अधिक महत्वपूर्ण है। यह दुनिया के लिए इतना विदेशी है कि जब आप आत्म-मृत्यु के लिए प्रतिबद्ध हो जाते हैं, तब भी आप इसे विदेशी पाएंगे।

मुझे इसके साथ बहुत संघर्ष करना पड़ा। वर्षों से मैंने प्रचारकों को सुना था कि वे लोगों को मसीह को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने के लिए हर भावनात्मक रणनीति का उपयोग करते हैं। कुछ लोगों ने मण्डली से विनती की, यह सुझाव देते हुए कि वे मसीह का अनुसरण करके उस पर उपकार करेंगे। दूसरों ने इतने व्यापक निमंत्रण जारी किए कि किसी भी ईमानदार व्यक्ति को प्यू में नहीं छोड़ा जाना चाहिए था। उन्होंने उन सभी से आग्रह किया जिन्होंने एक बुरा विचार सोचा था, एक अशुद्ध मकसद का मनोरंजन किया था या एक बाइबिल की शिक्षा को तोड़ दिया था। उन्होंने प्रचार किया जैसे कि परमेश्वर उन लोगों की संख्या के अनुसार उनका न्याय करेगा, जो उनकी दलीलों का जवाब देते थे, न कि मनुष्यों के लिए उनकी मसीह जैसी करुणा पर।

इसलिए, मैंने मान लिया कि मैं जितने अधिक लोगों को मसीह की ओर ले गया, मैं उतना ही अधिक मूल्यवान था। मैंने लोगों को ईसाई सभाओं में आकर्षित करने की कोशिश की, जिन्होंने सुसमाचार को वेश्यावृत्ति की: पाई-फेंकने की प्रतियोगिताएं, पानी के गुब्बारे की लड़ाई और यहां तक कि प्रेतवाधित घर। मैंने उद्धार की योजना की अपनी प्रस्तुति को चमकाने और प्रचार के बाद उपयोग किए जाने वाले निमंत्रणों को परिष्कृत करने के लिए कड़ी मेहनत की। मेरी वेदी की पुकारों के लिए छोटी-छोटी प्रतिक्रियाओं ने मुझे शर्मिंदा किया। मेरी एक सार्थक मानसिकता थी।

मैं हमेशा अपने मन में जानता था कि केवल परमेश्वर की आत्मा ने लोगों को पश्चाताप और अंगीकार करने के लिए प्रेरित किया, और यह कि मुझे केवल गवाही देने के लिए बुलाया गया था, परिवर्तित करने के लिए नहीं। लेकिन मैंने ऐसा व्यवहार किया जैसे कि मेरे ईसाई जीवन की गुणवत्ता और दूसरों का उद्धार सुसमाचार प्रचार में मेरे कौशल और रचनात्मकता पर निर्भर करता है।

अंत में, बाइबल ने मुझे सत्य के प्रति सचेत किया। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण परमेश्वर चाहता था कि मुझ में मसीह का चरित्र हो—ईसाई बनना। केवल तभी वह अपनी महिमा के लिए मेरे माध्यम से कार्य करेगा।

कितना निहत्था रहस्योद्घाटन है! मैंने गलत गतिविधि और धार्मिकता के लिए मनुष्य की प्रतिक्रिया को समझा था। मैंने पूजा के लिए व्यस्तता को प्रतिस्थापित किया था। अचानक अच्छे कामों में मेरी सुरक्षा नष्ट हो गई।

सच्चाई दर्दनाक रूप से स्पष्ट थी। बीमारों का इलाज करने से पहले एक डॉक्टर बनना पड़ता था। कानून का अभ्यास करने से पहले एक वकील होना पड़ता था। इसलिए, निश्चित रूप से, मसीह का कार्य करने से पहले मुझे मसीह जैसा होना था।

मसीही चरित्र में मानसिक और नैतिक गुणों का संयोजन होता है जो आपको "परमेश् वर के योग्य रीति से चलने में सक्षम बनाता है जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है" (1 थिस्सलुनीकियों 2:12)। यह आत्मा के फल को प्रदर्शित करता है: प्रेम, आनन्द, शान्ति, धैर्य, दया, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और आत्म-संयम (गलातियों 5:22,23)।

मसीह की सेवकाई की सावधानीपूर्वक जांच से पता चलता है कि उन गुणों में से जो उसके जीवन का प्रतीक थे, चार गुणों ने उसे परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के रूप में हर दूसरे व्यक्ति से अलग किया। वे आज्ञाकारिता, अधीनता, प्रेम और प्रार्थना थे।

जब मुझे पहली बार इसका पता चला, तो मैं दंग रह गया। क्या ऐसा हो सकता है कि देहधारी परमेश्वर ने इन चार गुणों की नींव पर अपनी कलीसिया का निर्माण करना चुना? वे एक कमजोर व्यक्ति की विशेषता लगते थे—एक जो दिशा, प्रेरणा और आत्मविश्वास के लिए पूरी तरह से दूसरे पर निर्भर करता है।

लेकिन यह बिल्कुल ऐसा था। इन गुणों ने पिता के साथ मसीह के संबंध को पूरी तरह से वर्णित किया। मसीह की शक्ति सर्वशक्तिमान पर उसकी निर्भरता से आई थी। और अगर मुझे परमेश्वर द्वारा उपयोग किया जाना था, तो उसके साथ मेरे रिश्ते को मेरे प्रभु के अनुरूप बनाना होगा। ईसाई चरित्र मेरे जीवन के हर पहलू को मसीह की छवि के अनुरूप बनाने की मेरी इच्छा (अपनी इच्छा का प्रयोग करते हुए) द्वारा बनाया गया है।

कुछ विश्वासियों ने इस शर्त के साथ हमारे अनुशासन मंत्रालय में शामिल होने की मांग की है कि उनकी प्रतिभा का उपयोग किया जाए। लेकिन ऐसा परिप्रेक्ष्य आत्म-मृत्यु से इनकार है और इंगित करता है कि उनके मूल्यों को विकृत किया गया है। एक शिष्य की मुख्य चिंता यह होनी चाहिए कि उसके चरित्र का निर्माण और पुन: पेश किया जाएगा। दर्शनशास्त्र के एक डॉक्टर, दिव्यता के एक मास्टर या एक सामाजिक कार्यकर्ता आवश्यक रूप से विश्व प्रभाव जैसे मिशन के संगठन के लिए अधिक मूल्यवान

नहीं है। उसके साथ किसी और से अलग व्यवहार नहीं किया जाता है। हम सभी शिष्य बनाने का प्रयास करते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि पहले शिष्य होने के बिना यह असंभव है। इससे पहले कि हम परमेश्वर को ज्ञात कर सकें, हमें उसे जानना चाहिए।

एक शिष्य किसी भी उपहार या प्रतिभा का उपयोग करता है जो राज्य का निर्माण करता है या शरीर को उन्नत करता है। वह आत्मविश्वास से उन क्षमताओं का प्रयोग करने से बचता है जो विनाशकारी रूप से उसके अभिमान को बढ़ावा दे सकती हैं या उसकी ईसाई परिपक्वता में बाधा डाल सकती हैं। एक मरे हुए व्यक्ति का ध्यान परमेश्वर पर होता है। वह मसीह की तरह बनना चाहता है।

यदि किसी व्यक्ति के पास अपनी प्रतिष्ठा, क्षमताओं या साख में सुरक्षा खोजने का कोई कारण था, तो वह प्रेरित पौलुस था। फिर भी उसने महसूस किया कि मसीह के समान बनने की तुलना में ये बकवास थे (फिलिप्पियों 3:8)। एक व्यक्ति का कौशल एक ईश्वरीय चरित्र के बिना बेकार है। बेशक, कोई भी नश्वर अपनी शक्ति पर ऐसे गुणों को प्राप्त नहीं कर सकता है। लेकिन परमेश्वर ने शिष्यों को "अपने पुत्र के स्वरूप के अनुरूप बनने के लिए पूर्वनियत किया है..." (रोमियों 8:29)।

एक दिन मैं एक दोस्त के साथ कैलिफोर्निया तट से नौकायन कर रहा था जब एक अप्रत्याशित, भारी कोहरा आ गया और लगभग सभी दृश्यता को मिटा दिया। हमें डर था कि हम इसे बंदरगाह पर वापस कभी नहीं पहुंचाएंगे। हम कोहरे के किनारे में लगभग पैंतालीस मिनट तक तैरते रहे, जब अचानक हमने फॉगहॉर्न का बेहोश लेकिन अलग स्वर सुना। उस स्वागत ध्वनि पर अपना पाठ्यक्रम तय करके और उसकी ओर इतनी सावधानी से आगे बढ़कर, हम अंततः सुरक्षित रूप से बंदरगाह पर लौट आए। अगर हमने फॉगहॉर्न नहीं सुना होता तो हम समुद्र में लक्ष्यहीन रूप से बह जाते।

यदि आपके पास अपने जीवन के लिए कोई लक्ष्य नहीं है, तो आप बिना दिशा के बहने की संभावना रखते हैं। यदि आप कुछ भी लक्ष्य नहीं रखते हैं, तो आप शायद इसे मारेंगे। इसलिए आपको अच्छी तरह से समझना चाहिए कि मसीह आपको कौन बनना चाहता है।

आज्ञाकारिता, अधीनता, प्रेम और प्रार्थना ऐसे उद्देश्य हैं जिनके लिए आपको और आपके द्वारा नेतृत्व किए जाने वाले प्रत्येक शिष्य को प्रयास करना चाहिए। वे बैरोमीटर के रूप में कार्य करते हैं जिसके द्वारा आप अपने विकास और उन लोगों की प्रगति को माप सकते हैं जिन्हें आप शिष्य बनाते हैं। वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि हम निम्नलिखित अध्यायों में व्यक्तिगत रूप से उनकी जांच करेंगे।

पीपी। 33-37

शिष्य की चेकलिस्ट - आपको कैसे पता चलेगा कि आप शिष्य हैं?
____ मेरा मसीह जैसा चरित्र मेरी आत्म-मृत्यु (एक शिष्य होने के नाते) का प्रमाण है।
____ मेरा चरित्र मेरे कौशल या क्षमताओं से अधिक महत्वपूर्ण है।

***चरण 6**: व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

मूल: एक शिष्य का निर्माण डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981 पब। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261011